HINDI
motivational stories

PART - II

© www.motivationalstoriesinhindi.in

संतुलित जीवन से ही चित्त को शांति

अमेरिका के उघोगपपि **एंड्रयू कार्नेगी** अरबपति थे। ज बवह मरने को थे तो उन्होंने अपने सेक्रेटरी से पूछा – 'देख, तेरा–मेरा जिंदगीभर का साथ है। एक बात मैं बहुत दिनों से पूछना चाहता था। ईश्वर को साक्षी मानकर सच बताओ कि अगर अंत समय परमात्मा तुझसे पूछे कि तू कार्नेगी बनना चाहेगा या सेक्रेटरी, तो तू क्या जवाब देगा?'

सेक्रेटरी ने बेबाक उत्तर दिया– 'सर! मैं तो सेक्रेटरी ही बनना चाहूँगा।' अरबपति कार्नेगी बोले– 'क्यों?' इस पर सेक्रेटरी ने कहा– 'मैं आपको 40 साल से देख रहा हूँ। आप दफ्तर में चपरासियों से भी पहले आ धमकते हैं और सबके बाद जाते हैं। आपने जितना धन आदि इकट्ठा कर लिया उससे अधिक के लिए निरंतर चिंतित रहते हैं। आप ठीक से खा नहीं सकते, रात को सो नहीं सकते। मैं तो स्वयं आपसे पूछने वाला था कि आप दौड़े बहुत, लेकिन पहुँचे कहां? यह क्या कोई सार्थक जिंदगी है? आपकी लालसा, चिंता और संताप देखकर ही मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवान! त्ेरी बड़ी कृपा, जो तूने मुझे एंड्रयू कार्नेगी नहीं बनाया।'

यह सुनकर कार्नेगी ने अपने सेक्रेटरी से कहा – 'मेरे मरने के बाद तुम अपना निष्कर्ष सारी दुनिया में प्रचारित कर देना। तुम सही कहते हो। **मैं धनपति कुबेर हूँ लेकिन काम से फुर्सत ही नहीं मिली–बच्चों को समय नहीं दे पाया, पत्नी से अपरिचित ही रह गया, मित्रों को दूर ही रखा, बस अपने साम्राज्य को बचाने–बढ़ाने की निरंतर चिंता। अब लग रहा है कि यह दौड़ व्यर्थ थी।**' कल ही मुझसे किसी ने पुछा था, 'क्या तुम तृप्त होकर मर पाओगे?' मैंने उत्तर दिया– 'मैं मात्र दस अरब डॉलर छोड़कर मर रहा हूँ। सौ खरब की आकांक्षा थी, जो अधूरी रह गई।'

सबक:

यह उदाहरण उन लोगों के लिए शिक्षाप्रद सिद्ध हो सकता है, जो पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में धन की लालसा लिए चिंता, भय, तनाव, ईर्ष्या आदि जैसे मनोरोगों से ग्रसित होकर सार्थक जीवन के वास्तविक आनंद से वंचित हो रहे हैं। कार्नेगी के सेक्रेटरी की भांति उत्तम चरित्र वाले व्यक्ति पॉजिटिव लाइफ में विश्वास करते हैं, जिससे उनका जीवन संतुलित रहता है, क्योंकि वे जानते हैं कि वर्तमान में ही भावी जीवन का निर्माण होता है और इसके लिए धन संचय की प्रवृत्ति निर्मूल है।

जरा–सी देरी हमारा बना–बनाया खेल बिगाड़ सकती ळे

लंदन की चर्चित मिनिस्ट्री में **सर एडवर्ड टॉमस** निर्माण एवं यातायात मंत्री थे। एक बहुत बड़े निर्माण कार्य को संपन्न कराने के लिए उनके विभाग ने टेंडर निकाले। टेंडर भरने वालों में सर टॉमस का एक सहपाठी भी था। वह टॉमस से मिला। टॉमस ने कहा– 'तुम सारी औपचारिकताएं पूरी कर दो, मैं तुम्हारे टेंडर पास कराने का पूरा प्रयास करूँगा, पर कार्य समय पर पूरा होना चाहिए।'

सर टॉमस कड़ाई से समय का पालन करते थे। सहपाठी प्रसन्न हो गया। उसका टेंडर मंजूर हो गया। सर टॉमस ने उसे फोन पर सूचित किया कि वह आदेश–पत्र ले जाय, जिसके लिए दोपहर एक बजे का समय निश्ति हुआ।

मित्र सर टॉमस के कार्यालय पहुँचा। उस समय घड़ी में एक बजकर दो मिनट हो चुके थे। सर टॉमस अपने कार्यालय में मौजूद थे, उन्हें मित्र के आने की सूचना मिली। उन्होंने घड़ी की ओर देखा और इंटरकाम पर अपने पी.ए. को सूचना दी– 'उनसे कहिए, उनका टेंडर रिजेक्ट हो गया है।' यह सुनते ही मित्र घबड़ा गया। उसने रिसेप्शन से ही फोन किया और उनसे बोला, 'डियर फ्रेंड, क्या बात हो गई? पहले स्वीकृत, अब अस्वीकृत!'

'कुछ बात नहीं, टेंडर नामंजूर हो गया।'

'मगर क्यों? आपने तो कहा था कि.....'

'कहा था लेकिन तुम समय पर कार्य पूरा नहीं कर सकोगे'– सर टॉमस ने कहा।

'सर, मैं हर हालत में कार्य समय पर पूरा करूँगा।'

'मुझे विश्वास है, तुम नहीं करोगे। **तुमने एक बजे का समय दिया था, दो मिनट लेट हो। जाहीर है, तुम समय पर कार्य पूरा नहीं करोगे।**'

'अरे, तुम मेरा.....'

'प्लीज, लीव इट, कहकर रिसीवर रख दिया।'

ज्रा–सी देर के कारण मित्र को गोल्डन चांस गंवाना पड़ा और वह निराश होकर लौट गया।

निष्कर्ष :

जिस व्यक्ति की दृष्टि में समय की कीमत नहीं है, वह बात का धनी नहीं होता है, क्योंकि उसका जीवन अव्यवस्थित रहता है और वह अपने कार्य को समय पर कभी पूरा नहीं कर सकता। उसका जीवन 'असफल' कहलाता है।

दूसरों में 'अच्छाइयाँ' दूँढ़ें

एक दिन **श्रील चेतन्य महाप्रभु** पुरी (उड़ीसा) के जगन्नाथ मंदिर में 'गुरूड़ स्तंभ' के सहारे खड़े होकर दर्शन कर रहे थे। एक स्त्री वहां श्रद्धालु भक्तों की भीड़ को चीरती हुई देव–दर्शन हेतु उसी स्तंभ पर चढ़ गई और अपना एक पांव महाप्रभुजी के दाएं कंधे पर रखकर दर्शन करने में लीन हो गई। यह दृशय देखकर महाप्रभु का एक भक्त घबड़ाकर धीमे स्वर में बोला, 'हाय, सर्वनाश हो गया! जो प्रभु स्त्री के नाम से दूर भागते हैं, उन्हीं को आज एक स्त्री का पाँव र्स्पश हो गया! न जाने आज ये क्या कर डालेंगे।' वह उस स्त्री को नीचे उतारने के लिए आगे बढ़ा ही था कि उन्होंने सहज भावपूर्ण शब्दों में उससे कहा –'अरे नहीं, इसको भी जी भरकर जगन्नाथ जी के दर्शन करने दो, इस देवी के तन–मन–प्राण में कृष्ण समा गए हैं, तभी यह इतनी तन्मयी हो गई कि इसको न तो अपनी देह और मेरी देह का ज्ञान रहा.....अहा! ठसकी तन्मयता तो धन्य है.....इसकी कृपा से मुझे भी ऐसा व्याकुल प्रेम हो जाए।'

निष्कर्ष :

काम करते समय दूसरों की गलतियों की बजाय अच्छाइयां दूँढ़ना अपनी आदत में लें, जिससे हमारे का की गुणवत्ता बढ़े और समय की बचत हो। साथ में यह आदत हमारे शिष्ट–व्यवहार को दर्शाएगी।

अपना दृष्टिकोण व्यापक बनाएं

थॉर्नबरी ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता थे। सितारों की स्थिति का अध्ययन करने की धुन में उनकी नजर सदा आसमान में रहती थी। एक बार वे तारों की स्थिति का अध्ययन करते जा रहे थे कि एक गहरे गड्ढ़े में गिर पड़े। एक बूढ़ी महिला ने उन्हें बाहर निकाला। पूछने पर बड़े गर्व से थॉर्नबरी ने कहा – 'मैं एक बहुत बड़ा ज्योतिषी हूँ। दुनियाभर के ज्योतिषी तारों की स्थिती पूछने के लिए मेरे पास आते हैं। अगर तुम्हें कभी कुछ पूछना हो तो मेरे पास आना।'

उस स्त्री ने कहा–'बेटे, मैं कभी तेरे पास नहीं आऊंगी।' 'क्यों?' – थॉर्नबरी ने चौंककर पूछा। स्त्री ने कहा – 'क्योंकि जिसे धरती के गड्ढ़ों की जानकारी नहीं है, उसे तारों की क्या जानकारी होगी?' उन्हें यह बात चुभ गई। उन्होंने उसी दिन से ज्योतिष के साथ–साथ भू–गर्भ का भी अध्ययन शुरू कर दिया और धरती में छिपे अनेकानेक महान् रहस्यों की खोज कर डाली।

निष्कर्ष :

देखने की शक्ति हमारे अंदर है। हमारा नजरिया ऐसा हो कि मन की खिड़कियाँ सदा खुली रहें, जिससे चारों तरफ की स्थिति पर हम नजर डाल सकें। लक्ष्यों के निर्माण में हमें अपने जीवन–उद्देश्य की गहराई तक की सोच बनानी पड़ती है, तभी हमें स्थायी सफलता मिलती है। **याद रखें,** कभी–कभी अच्छा पाने के लिए हमें काफी गहराई में जाना पड़ता है, क्योंकि हो सकता है कि ऊपर से यह साफ न दिखाई दे रहा हो।

यथार्थ की पहचान

काशी में पावन सलिला गंगा के तट पर मुनि का बड़ा आश्रम था। उसमें रहकर अनेक शिष्य वेद–वेदांत की शिक्षा ग्रहण करते थे। शिष्यों में एक का नाम दुष्कर्मा था। वह सब शिष्यों में सबसे ज्यादा आज्ञाकारी, मझदार और दयालु प्रवृति का था।

एक दिन उसके सहपाठी ने कहा, 'दुष्कर्मा, जरा यह श्लोक समझा दो, मेरी समझ में नहीं आ रह। बड़ा ही कठिन है।'

'अरे, यह तो बहुत ही सरल है। अभी समझा देता हूं।' दुष्कर्मा ने सहपाठी को श्लोक समझा दिया।

डसके सभी मित्र उसे दुष्कर्मा के नाम से पुकारते थे। उसे बहुत बुरा लगता था। एक दिन उसने मुनि से कहा, 'गुरूजी, मेरा कोई और नाम रख दीजिए। मुझे यह नाम अच्छा नहीं लगता।'

यह सुनकर मुनि मुस्कराए। फिर उन्होंने कहा, 'ठीक है, बेटा। पहले तुम देशाटन कर आओ। जब वापस आओगे तो तुम्हारा नाम बदल देंगे।'

छुष्कर्मा गुरूजी के चरण स्पर्श करके देशाटन के लिए निकल पड़ा।

व्ह एक गांव में पहुंचा। वहां उसने देखा कि कुछ लोग कंधे पर एक शव को ले जा रहे हैं। उसने पीछे काफी लोग, 'राम नाम सत्य है' कहते हुए चल रहे थे।

दुष्कर्मा ने एक आदमी से पूछा, 'भाई! म्रनेवाले का क्या नाम था?'

उस आदमी ने कहा, 'जीवक।'

'ऐं! जीवक भी कभी मरता है?' दुष्कर्मा ने हैरानी से पूछा।

'बड़े मूर्ख हो। नाम से तो मात्र व्यक्ति को पहचान जाता है।'

दुष्कर्मा उसकी बात पर विचार करता हुआ दूसरे गांव में पहुंचा। वहां उसने देखा कि एक औरत एक लड़की को बुरी तरह पीट रही थी।

यह देखकर दुष्कर्मा को दया आ गई। उसने पूछा, 'देवी! आप इसको क्यों पीट रही हैं?'

'यह मेरी नौकरानी है। इसे पैसे लेकर सामान लाने भेजा था और खाली हाथ वापस आ गई।' औरत ने क्रोधित मुद्रा में कहा।

दुष्कर्मा ने एक मुद्रा निकालकर उस औरत को दी और कहा, 'क्रिपया इसे न मारे।'

एक आदमी से उसने पूछा, 'उस लड़की का नाम क्या है?'

एक आदमी बोला, 'उसका नाम लक्ष्मी है।'

'नाम तो बहुत अच्छा है लेकिन नौकरी दूसरे के यहां करती है?'

'अजीब आदमी हो! नम तो केवल पहचान के लिए होता है, अर्थ से क्या होता है।' यह कहकर वह आदमी आगे चल दिया।

'शायद यह ठीक ही कहता है पर.....।' अपने नाम से कुछ–कुछ संतुष्ट होकर दुष्कर्मा गांव छोड़कर वापस काशी की ओर लौट पड़ा।

रास्ते में फिर उसे एक आदमी मिला। उसने कहा, 'भाई मैं रास्ता भूल गया हूं, मुझे काशी का रास्ता बता दोगे?'

दुष्कर्मा ने कहा, 'मैं भी वहीं जा रहा हूं। मेरे साथ चलो।'

दुष्कर्मा ने उससे पूछा, 'मित्र! तुम्हारा क्या नाम है?'

वह आदमी बोला, 'पंथक कहते हैं मुझे।'

'पंथक होकर भी तुम रास्ता भूल गए? दुष्कर्मा ने व्यंग्यपूर्ण मुद्रा में कहा।'

'क्यों मजाक करते हो? नाम से क्या लेना–देना। रास्ता तो कोई भी भटक सकता है।' वह आदमी बोला, 'यह तो सबको पता है कि नाम से केवल आदमी की पहचान ही होती है।'

'तुम ठीक कहते हो। आखिर मुझे यथार्थ समझ में आ गया।'

काशी पहुंचते ही दुष्कर्मा अपने गुरूजी के पास पहुंचा।

'क्या, अब भी तुम अपना नाम बदलना चाहोगे?' मुनि ने दुष्कर्मा से पूछा।

'गुरूजी, अब मैं समझ गया कि नाम से केवल व्यक्ति की पहचान होती है, मैं अपने वर्तमान नाम से ही संतुष्ट हूं।'

निष्कर्ष :

व्यक्ति की पहचान उसके नाम से नहीं बल्कि उसके गुण–धर्म से होती है।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे

एक बार पंक्षियों का राजा अपने दल के साथ भोजन की खोज में एक जंगल में गया।

'जाओ और जाकर दाने और बीज ढूंढ़ो। मिले तो बताना। सब मिलकर खाएगें।' राजा ने पंक्षियों को आदेश दिया।

सभी पक्षी दानों की तलाश में उधर निकल पड़े। उड़ते–उड़ते एक चिड़िया उस सड़क पर आ गई जहां से गाड़ियों में लदकर अनाज जाता था। उसने सड़क पर अनाज बिखरा देखा। उसने सोचा कि वह राजा को इस जगह के बारे में नहीं बताएगी। पर किसी और चिड़िया ने इधर आकर यह अनाज देख लिया तो...? ठीक है, बता भी दूंगी लेकिन यहां तक नहीं पहुंचने दूंगी।

वह वापस अपने राजा के पास पहुंच गई। उसने वहां जाकर बताया कि राजमार्ग पर अनाज के ढेरों दाने पड़े हैं। लेकिन वहां खतरा बहुत है।

तब राजा ने कहा कि कोई भी वहां न जाए।

इस तरह सब पक्षियों ने राजा की बात मान ली।

वह चिड़िया चुपचाप अकेली ही राजमार्ग की ओर उड़ चली और जाकर दाने चुगने लगी। अभी कुछ ही देर बीती कि उसने देखा एक गाड़ी तेजी से आ रही थी।

चिड़िया ने सोचा, गाड़ी तो अभी दूर है। क्यों न दो–चार दाने और चुग लूं। देखते–देखते गाड़ी चिड़िया के उपर से गुजर गई और उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

उधर शाम को राजा ने देखा कि वह चिड़िया नहीं आई है तो उसने सैनिकों को उसे ढूंढ़ने का आदेश दिया।

वे सब ढूंढ़ते–ढूंढ़ते राजमार्ग पर पहुंच गए। वहां देखा तो वह चिड़िया मरी पड़ी थी।
राजा ने कहा, 'इसने हम सबको तो मना किया था किंतु लालचवश वह अपने को नहीं रोक पाई और प्राणों से हाथ धो बैठी।'

शिक्षा

अत्यधिक लाभ का फल कभी–कभी प्राणघातक भी हो सकता है।

जीवन मधुरस से परिपूर्ण है

एक बार एक व्यक्ति ने लियो टॉल्सटॉय से पूछा, 'जीवन क्या है?' उन्होंने एक क्षण उस व्यक्ति की ओर देखा, फिर कहा – 'एक बार एक यात्री जंगल से गुजर रहा था। अचानक एक जंगली हाथी उसकी तरफ झपटा, बचाव का अन्य कोई उपाय न देखकर वह रास्ते के एक कुएं में कूद गया। कुएं के बीच में बरगद का एक मोटा पेड़ था। यात्री उस पेड़ की जटा पकड़कर लटक गया। कुछ देर बाद उसकी निगाह कुएं में नीचे की ओर गई, नीचे एक विशाल मगरमच्छ अपना मुंह फाड़े उसके नीचे टपकने का इंतजार कर रहा था। डर के मारे उसने अपनी निगाह उपर कर ली। उपर उसने देखा कि शहद के एक छत्ते से बूंद–बूंद मधु टपक रहा था। स्वाद के सामने वह भय को भूल गया। उसने टपकते हुए मधु की ओर बढ़कर अपना मुंह खोल दिया और तल्लीन होकर बूंद–बूंद मधु पीने लगा, परन्तु यह क्या? उसने आश्चर्यचकित होकर देखा कि वह जटा के जिस मूल को पकड़कर लटका हुआ था, उसे एक सफेद और एक काला चूहा कुतर–कुतर कर काट रहे थे।'

प्रश्नकर्ता की प्रश्नसूचक मुद्रा को देखकर टॉल्सटॉय ने कहा, 'नहीं समझे तुम?' उसने कहा, 'आप ही बताइए।' तब वे समझाते हुए उससे बोले– 'वह हाथी 'काल' था, मगरमच्छ 'मृत्यु' थी। मधु 'जीवन–रस' था और काला तथा सफेद चूहा 'रात और दिन'। इन सबका सम्मिलित नाम ही जीवन है।'

तात्पर्य यह है कि वर्तमान में हमारा जीवन सीमित समय तक के लिए है और हमें इसकी डैडलाइन भी मालूम नहीं है। फिर भी हम किसी प्रकार के भय से मुक्त रहकर अपने निर्धारित कामों में आनंदपूर्वक तल्लीन रहें। इसी का नाम जीवन है, जो मधुरस से परिपूर्ण है।

याद रखें–

हर एक के जीवन में सुख और दुःख दोनों आते हैं जैसे कि समुद्र में ज्वार–भाटा। हमें चाहिए कि इन दोनों को एक 'समभाव' में लेते हुए समय का आदर करें यानि इसका एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दें। अगर कोई यह कहे कि 'अभी मेरी यूथ एज है, 40–50 का होने के बाद मैं जीवन के प्रति गंभीरता से सोचूंगा, तो यह उसका कोरा भ्रम है, क्योंकि जीवन तो जन्म से ही चलता आ रहा है। महान् व्यक्तियों की जीवनियां बताती हैं कि व्यक्ति के जीवन का मूल्य उसकी लम्बी उम्र से नहीं, बल्कि उसकी कृतियों से आंका जाता है। यहां कुछ ऐसे व्यक्यिों के उदाहरण हैं जो 40–50 की आयु से ऊपर नहीं पहुंचे और वे अपनी महान् कृतियों और उपलब्धियों के द्वारा विश्व में अपना नाम छोड़ गए, जैसे– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्वामी विवेकानंद, स्वामी शंकराचार्य, जयशंकर प्रसाद, लाला हरदयाल, जॉन कीट्स, पी.बी. शैली, फ्रेंच दार्शनिक पास्कल, जॉन एफ. कैनेडी इत्यादि। मानव–जीवन बार–बार नहीं मिलता है। अतः इस सीमित जीवन में हमें ऐसे प्रशंसनीय कार्य करके अपनी अमिट छाप यहां छोड़े कि आगे चलकर दूसरे लोग उनसे 'प्ररणा' लेते रहें।'

तन से बढ़कर मन का सौंदर्य है

महाकाव्य 'मेघदूत' के रचयिता कालिदास 'मूर्ख' नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनका विवाह सुंदर व महान गुणवती विघोतमा से हुआ था। उन महाकवि से राजा विक्रमादित्य ने एक दिन अपने दरबार में पूछा, 'क्या कारण है, आपका शरीर मन और बुद्धी के अनुरूप नहीं है?' इसके उत्तर में कालिदास ने अगले दिन दरबार में सेवक से दो घड़ों में पीने का पानी लाने को कहा। वह जल से भरा एक स्वर्ण निर्मित घड़ा और दूसरा मिट्टी का घड़ा ले आया। अब महाकवि ने राजा से विनयपूर्वक पूछा, 'महाराज!' आप कौनसे घड़े का जल पीना पसंद करेंगे?' विक्रमादित्य ने कहा, 'कवि महोदय, यह भी कोई पूछने की बात है? इस ज्येष्ठ मास की तपन में सबको मिट्टी के घड़े का ही जल भाता है।' कालिदास मुस्कराकर बोले, 'तब तो महाराज, आपने अपने प्रश्न का उत्तर स्वयंम ही दे दिया।' राजा समझ गए कि जिस प्रकार जल की शीतलता बर्तन की सुंदरता पर निर्भर नहीं करती, उसी प्रकार मन–बुद्धी का सौंदिर्य तन की सुंदरता से नहीं आँका जाता।

यह है मन का सौंदय, जो मनुष्य को महान् बना देता है और उसका सर्वत्र सम्मान होता है।

www.motivationalstoriesinhindi.in